माँ आरण्य देवी बी.एड. कालेज

बामपाली - आरा, 802312

(सम्बद्ध: आर्यभट्ट ज्ञान वि. वि. पटना)

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

बुनियादी शिक्षा एवं शिक्षक की क्रियाएँ

दिनांक : मई 16-17, 2020

आयोजक एवं कार्यक्रम स्थल :

माँ आरण्य देवी बी.एड. कालेज, बामपाली-आरा, 802312

वैबसाइट: www.maaaranyacollege.com

संयोजक / सम्पर्क व्यक्ति

(डॉ.) महेंद्र सिंह

मो:9453532902

अध्यक्ष

डॉ प्रशांत कुमार सिंह

ईमेल:mahiedutrack2012@gmail.com

माँ आरण्य देवी बी.एड. कालेज, बामपाली - आरा

माँ आरण्य देवी बी.एड. कालेज, बिहार राज्य के भोजपुर जिला मुख्यालय आरा शहर के चँदवा तिराहे से 6 किलोमीटर दूर आरा - बक्सर मार्ग (राष्ट्रीय राज्य मार्ग सं.-32) पर बामपाली ग्राम में है। माँ आरण्य देवी बी.एड. कालेज की स्थापना वर्ष 2010 में हुई। कालेज में बी.एड. का प्रशिक्षण शैक्षिक सत्र का संचालन वर्ष : 2012-13 में आर्यभट्ट ज्ञान वि. वि. पटना से संबद्धता प्राप्त कर प्रारम्भ हुआ। कालेज की स्थापना - अकादमिक नेतृत्व प्रदान करने, सभी के लिए शिक्षा की पहुंच, उच्च सामाजिक मूल्यानुरूप भावी पीढ़ी निर्माण, समता, गुणवत्ता, वहनीयता एवं जवाबदेही जैसे मार्गदर्शी उद्देश्यों पर आधारित है ।

संगोष्ठी परिचय:

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 150वीं वर्षगांठ की पृष्ठभूमि में गाँधी जी के शैक्षिक विचारों का मूर्त रूप “बुनियादी शिक्षा योजना” को वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के शिल्पकार/शिक्षक की क्रियाओं को नवीन आयाम देना आवश्यक है। बुनियादी शिक्षा की आज भी प्रासंगिकता है क्योंकि व्यक्ति के प्रारम्भिक जीवन का प्रशिक्षण भविष्य की रूपरेखा तय करता है। बुनियादी शिक्षा बच्चे को विभिन्न विषयों की शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प के माध्यम से दिये जाने पर बल देती है। आधारभूत शिल्प सीखने के समवाय पद्धति का उपयोग करता है जिसमें शिक्षण विधि करके सीखना, अनुभव द्वारा सीखना, तथा क्रिया द्वारा सीखना आदि, ज्ञान को स्थायी बनाने के साथ-साथ श्रम के प्रति निष्ठा भी उत्पन्न करता है। गांधीजी बच्चे को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना चाहते थे ताकि बालक स्वावलम्बी बन सके। बालक के प्रारम्भिक जीवन में स्वास्थ्य, भाषा, संज्ञान, भाव, समाज, रचना, सौंदर्य आदि पहलुओं पर समय-समय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए जिससे बच्चों का समग्र एवं व्यापक विकास हो सके। जन्म से 8 वर्ष तक के इस काल में माता-पिता, शिक्षक एवं सामाजिक क्रियाओं का प्रभाव बच्चे के भावी जीवन को पर्याप्त अनुभव एवं अवसर प्रदान करता है। अतः यह आवश्यक है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था में उचित सर्वांगीण देखभाल करके शिक्षा को हम रुचीकर, भारहीन, लचीली, आनन्ददायक, समृद्ध एवं अर्थपूर्ण बनाने में सक्षम हों।

संगोष्ठी उद्देश्य:

- बच्चों के प्रति शिक्षकों, अभिभावकों की समझ विकसित करना।
- बच्चों की रुचि के अनुसार शिक्षा को केन्द्रित करना।
- बच्चो की शिक्षा में हस्तशिल्प या उत्पादक कार्य केन्द्रित करना।
- शिक्षण विधियों को वास्तविक कार्य-क्रियाओं और अनुभवों पर आधारित करना ।
- बच्चों की शैक्षिक जरूरतों एवं महत्व की व्याख्या करना।
- बच्चों की शिक्षा मे उपयोगी शिक्षाशास्त्रीय उपागमों की खोज करना।
- खेल आधारित उपयुक्त विकासात्मक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए गतिविधियों एवं अनुभव का आयोजन कर सकेंगे।
- पाठ्यक्रम में मौलिक तथ्यों के समावेश को बढ़ाना।
- बच्चों की शिक्षा में चेतना, प्रेरणा, उत्साह उत्तपन्न करना।
- बच्चों की शिक्षा रुचीकर, भारहीन, लचीली, आनन्ददायक, समृद्ध एवं अर्थपूर्ण बनान।
- बच्चों की शिक्षा में शिक्षक, अभिभावक, समाज आदि के योगदान की सकारात्मक वृद्धि करना।

- ❖ बच्चे शिक्षा से सहज जुड़ाव को उत्तपन्न कर सकें।
- ❖ बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में भविष्य की चुनौतियों एवं संभावनाओं को समझना।

मुख्य विषय:

बुनियादी शिक्षा एवं शिक्षक कि क्रियाएँ

उप विषय:

- ➢ शिशु देखभाल
- ➢ बाल जिज्ञासा
- ➢ बाल प्रवत्तियाँ / स्वभाव
- ➢ बाल संस्कार
- ➢ समग्र संवेगों पर ध्यान
- ➢ समृद्ध व्यहार/बरताव
- ➢ खेल/कला आधारित शिक्षा
- ➢ परिवेश आधारित शिक्षा
- ➢ निरीक्षण आधारित शिक्षा
- ➢ प्राकृतिक सामाग्री आधारित शिक्षा
- ➢ बाल क्रिया आधारित शिक्षा
- ➢ सहयोग आधारित शिक्षा
- ➢ कहानी/गीत/कविता/नाटक/कठपुतली/कार्टून आधारित शिक्षा
- ➢ भारहीनशिक्षा
- ➢ बाल सीखने पर आधारित शिक्षण विधियाँ
- ➢ व्यतिगत परामर्श
- ➢ आकर्षक पाठ्यपुस्तक
- ➢ सरल एवं लचीला पाठ्यक्रम
- ➢ माता-पिता के दायित्व
- ➢ सुधार परिदृश्य
- ➢ शिक्षक प्रतिबद्धता एवं क्षमता
- ➢ संस्थागत क्षमता में वृद्धि
- ➢ स्वावलम्बन शिक्षा
- ➢ मातृभाषा शिक्षा

शोध पत्र / आलेख आमंत्रण हेत् निर्देश:

प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाएगी कि उनके आलेख / शोध पत्र संगोष्ठी के विमर्श बिन्दुओं (विषय/उपविषय) से सम्बन्धित एवं मौलिक होना चाहिए। पूर्ण शोध पत्र अधिकतम 3000 शब्दों में होना चाहिए। हिन्दी में लिखे गए शोध पत्र गूगल हिन्दी / कृतिदेव 010 / मंगल न्यू हेडिंग (साइज -12) में तथा अंग्रेजी में न्यू टाइम्स रोमन (फाण्ट साइज - 14) में ही स्वीकार किये जायेंगे। सभी प्रतिभागी अपने शोध पत्र / आलेख को ईमेल पते- principalmadbca@gmail.com पर निश्चित तिथि के भीतर ही प्रेषित करेंगे। चयनित शोध पत्र / आलेख के सारांश का प्रकाशन स्मारिका में किया जाएगा।
नोट:कालेज का प्रत्येक प्रशिक्षु शोध पत्र लिखेगा।

प्रस्तुतिकरण:

शोध पत्र / आलेख का वाचन मौखिक / पी. पी. टी. प्रस्तुतिकरण के माध्यम से किया जाएगा। नोट: चार सर्वोत्कृष्ट प्रतिभागियों / प्रशिक्षुओं को पुरस्कृत किया जाएगा।

पंजीकरण शुल्क एवं आवासन व्यवस्था :

प्रशिक्षु: 150/- । संकाय सदस्य: 200/- । नोट: बाह्य प्रतिभागियों की आवासन व्यवस्था अतिथि गृह में की जाएगी।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि: 24/04/2020.
सारांश स्वीकृत करने की तिथि: 27/04/2020.

संरक्षक:

श्री भगवान दास
श्री आनन्द रमण
डॉ श्रीदीपांकर ज्ञान
डॉ अनिल कुमार सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
बुनियादी शिक्षा एवं शिक्षक की क्रियाएँ

दिनांक: दिनांक : मई 16-17, 2020

आयोजक :

माँ आरण्य देवी बी.एड. कालेज,बामपाली-आरा

(माँ मुंडेश्वरी एडुकेशनल एण्ड टेकनिकल इंस्टीट्यूट की एक संस्था)

सम्बद्ध: आर्यभट्ट ज्ञान वि.वि. पटना एवं मान्यता: एन.सी.टी.आई.

पंजीयन प्रपत्र

नाम:_____

पदनाम:_____

पता:_____

_____

_____

शैक्षणिक योग्यता:_____

ईमेल:_____

मोबाइल नं.:_____

शोध पत्र शीर्षक: _____

_____

बाह्य प्रतिभागियों की आगमन तिथि :_____

बाह्य प्रतिभागियों की प्रस्थान तिथि:_____

तिथि:_____

प्रतिभागी का हस्ताक्षर